SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

"अध्यापन–अनुभव व कार्यक्षेत्रानुसार महिला–शिक्षकों में भूमिका–तनाव की स्थिति"

मोहित शर्मा
शोधार्थी
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, (उ.प्र.)

डॉ0 धर्मवीर सिंह
शोध पर्यवेक्षक
ग्लोकल विश्वविद्यालय,सहारनपुर, (उ.प्र.)

शोध सारांश:

उपर्युक्त तथ्यात्मक स्थितियों के आधार पर यह सुस्पष्ट हो रहा है कि अध्यापन–अनुभव का भूमिका–तनाव पर कोई निर्णयात्मक प्रभाव नहीं दिखायी देता। अतः अध्यापन–अनुभव और भूमिका–तनाव में नकारात्मक सम्बन्ध है, तथा कार्यक्षेत्रानुसार महिला शिक्षकों में भूमिका –तनाव की स्थिति अलग–अलग होती है। अर्थात् –ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत महिला–शिक्षक, शहरी क्षेत्र में कार्यरत महिला–शिक्षकों की तुलना में अधिक भूमिका–तनाव में रहती हैं।

मुख्य शब्द– *अध्यापन–अनुभव, क्रियान्वयन, सर्वशक्तिमान, शिक्षण–प्रक्रिया।*

समाज को आडम्बरों से दूर रहने तथा सांसारिक यथार्थता को जीवन्त करने वाले समाज–सुधारक रूप में विख्यात कवित 'कबीरदास' ने गुरू' की सामाजिक प्रस्थिति एवं भूमिका का चित्रण दोहे के माध्यम से इस प्रकार किया कि शायद इससे आगे और कुछ कहने को शेष नहीं रह जाता।' उन्होंने लिखा–

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागौ पाँय।
बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताए।।'

स्पष्ट है कि कबीर ने गुरू की प्रस्थिति को ईश्वर से भी ऊपर बताया है। इसका मूल आधार यही है, कि 'गुरू' ही बच्चे को सर्वशक्तिमान ईश्वर की सत्ता का सही ज्ञान कराता है। वह उसे अज्ञानता के अंधेरे से ज्ञान–रूपी प्रकाश की ओर ले जाता है। वह अति सम्मानीय, पूजनीय और श्रद्धेय है। इसलिए समाज उससे अपेक्षा करता है कि अपनी ज्ञान –रूपी प्रस्थितिगत भूमिकाओं के द्वारा समाज का, विशेषकर किशोर और युवा वर्ग का उचित मार्गदर्शन कर, समसामयिक समाजीकरण करें तथा युवा शक्ति को सृष्टि व समाज के लिये तैयार करें।

अतः स्पष्ट होता है कि शिक्षक (गुरू) शिक्षा–प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अभिकर्ता एवं संरचनात्मक इकाई है। वह शिक्षण–प्रक्रिया एवं विकास की मेरूदण्ड है।[2]

एक शिक्षक की प्रस्थिति समाज में उच्च होती है, चाहे वह प्राथमिक स्तर क अध्यापक हो अथवा उच्च शिक्षण संस्थान स्तर का। लेकिन प्रत्येक स्तर के शिक्षक के दायित्व और भूमिकाओं में कुछ अन्तर अवश्य होता है। प्राथमिक शिक्षा चूंकि राज्य सरकार द्वारा संचालित होती है, इसलिए राज्य–कर्मचारी के रूप में उनकी भूमिकाएं बढ़ जाती है। राज्य सरकारें अपनी नीति एवं योजनाओं के क्रियान्वयन में इस स्तर के शिक्षकों की सेवाएं लेती हैं। सेवा देना अनिवार्यता की श्रेणी में होता है। इसलिए भूमिका–संक्रमण तथा सीमाहीन भूमिकाओं के चलते प्राथमिक शिक्षा–स्तर का शिक्षक वर्ग 'भूमिका तनाव' या खिंचवा के दौर से गुजरता रहता है। उसे अपनी शिक्षक रूपी स्थायी भूमिका को भी निरंतर करते रहना होता है। प्राथमिक एवं जूनियर स्तर पर कार्यरत महिला शिक्षक–वर्ग के समक्ष 'भूमिका–संघर्ष', भूमिका तनाव की स्थिति पुरूष शिक्षक की तुलना में और भी गंभीर होती हैं, क्योंकि कार्यस्थलीय भूमिकाओं के साथ–साथ घेरलू भूमिकाओं का निर्वहन भी अनिवार्य रूप उसे ही (महिला शिक्षक को) करना होता। इसलिए समाज में उच्च सम्मानित प्रस्थिति प्राप्त महिला शिक्षक वर्ग को भी भूमिका–तनाव एवं भूमिका –संघर्ष से प्रायः गुजरते रहना होता हैं।

भूमिका, एक गतिशील एवं व्यावहारिक पहलू हैं। प्रस्थिति, प्रदत्त अथवा अर्जित हो सकती है, किन्तु दोनों में ही भूमिका का निर्वहन किया जाता है। जब कोई व्यक्ति अपने पद या प्रस्थिति से सम्बन्धित दायित्वों को निर्वाह तथा उससे सम्बन्धित सुविधाओं एवं विशेषाधकारों का उपयोग करता है, उसे भूमिका कहा जाता है। अर्थात् ''प्रस्थिति या दायित्व के अनुरूप कार्य निर्वहन ही भूमिका है।'' एक ही समय में एक से अधिक भूमिकाओं का निर्वहन करना समय की आवश्यकता हो सकती है, किन्तु सामान्य रूप से भी एक व्यक्ति को एक से अधिक भूमिकाओं को करना पड़ता है। पद या प्रस्थिति के परिप्रेक्ष्य मं दायित्व निर्वहन को ही 'भूमिका' कहा गया है।

ऑगबर्न एण्ड निमकॉफ[3] (Ogburn & Nimkaff) ने भूमिका को परिभाषित करते हुए लिख है, ''भूमिका एक समूह में एक विशिष्ट पद से सम्बन्धित सामाजिक प्रत्याशाओं एवं व्यवहार प्रतिमानों का योग है, जिसमें कर्तव्यों एवं सुविधाओं दोनों का समावेश होता हैं बेन्टन[4] ने भी भूमिकाओं को वर्गीकृत किया । इनके अनुसार भूमिका तीन प्रकार की होती है। आधार रूपी, सामान्य तथा स्वतन्त्र।

जीवन की विभिन्न प्रस्थिति से सम्बन्ध विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं का निर्वहन व्यक्ति द्वारा किया जाता है। किन्तु एक ही समय में एक प्रस्थिति से सम्बद्ध भूमिकाओं एवं किसी संस्था या प्रशासनिक स्तर से थोपी गई भूमिकाओं के साथ समायोजन, अनुकूलन या निर्वहन न होने के फलस्वरूप व्यक्ति एक विशेष प्रकार के तनाव/खिंचवा से गुजरता है। उस स्थिति में उसे भूमिका तनाव कहा जाता है।

भूमिका तनाव/संघर्ष इसी प्रतिमानित अनुक्रम में विच्छेदन के कारण उत्पन्न होता है। यह भी देखा गया है कि भूमिका तनाव/संघर्ष कुछ विशेष परिस्थितियों में पैदा होता है। उदाहरण के लिए जब एक कर्ता या अभिनयकर्ता दो या दो से अधिक भूमिकाओं को क्रमबद्ध रूप में पूर्ण करने का प्रयास करता है, किन्तु वह ऐसा करने में असफल हो जाता है। कभी–कभी ये भूमिकाएं एक–दूसरे की विरोधाभासी भी हो सकती है। महिला अध्यापिका के साथ भी कुछ इसी प्रकार का घटनाक्रम घटित के साथ भी कुछ इसी प्रकार का घटनाक्रम

घटित होता है, जब उसे गृहणी के साथ–साथ अध्यापिका की भूमिकाएँ निभानी पड़ती है। महिलाओं में भूमिका तनाव के संदर्भ में लिण्टन[5] (Linton -1945) और गॉफमेन[6] (Goffman-1961) ने कहा कि व्यक्तित्व विशेषताओं में भिन्नता तथा स्वभाव के कारण महिलाओं में भूमिका तनाव देखा जा सकता है।

''आर०एल० कॉन एण्ड आर०पी० क्विन[7] (R.L.Kohn and R.P. Quinn-1970) ने भूमिका तनाव को तीन मुख्य प्रकारों से विभाजित किया है –

1. उम्मीदों से पैदा होने वाला तनाव (Expectation Generated Stess)
2. उम्मीद के स्त्रोत से असंगति (Expectation Resource Discrepancies)
3. भूमिका तथा व्यक्तित्व (Role and Personality)

प्रस्तुत शोध पत्र में महिला शिक्षकों में भूमिका–तनाव की स्थितियों का आनुभविक अध्ययन कर तथ्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

1. अध्यापन अनुभव और भूमिका तनाव में नकारात्मक सम्बन्ध है।
2. कार्यक्षेत्रानुसार महिला शिक्षकों में भूमिका तनाव की स्थिति अलग–अलग होती है।

शोध विधि –

प्रस्तुत शोध पत्र अध्येता द्वारा किये गये आनुभविक शोध ''जिला परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों में भूमिका–तनाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' का अंश स्वरूप है। यह अध्ययन जनपद बिजनौर (उ०प्र०) की धामपुर तहसील के जिला परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों में से उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रविधि द्वारा प्रतिचयनित 290 महिला शिक्षक सूचनादात्रियों पर केन्द्रित है। अध्ययन समस्या पर प्राथमिक एवं द्वैतीयक स्त्रोतों से तथ्य संकलित कर उनका विश्लेषण, सरणीयन, निरूपण आदि वैज्ञानिक विधि द्वारा किया गया है। अभिमतात्मक आधार पर निकाले गये निष्कर्षो क प्रमापीकरण सांख्यिकीय विधि कोई वर्ग मूल्य (Chi-square value) द्वारा किया गया है।

उपलब्धियाँ –

मानव ऊर्जा एवं बहुभूमिकाओं से सम्बन्धित प्रथम सिद्धांत 'अभाव उपकल्पना' (Scarcity Hypothesis) गुडे[6] (1960) द्वारा विकसित की गयी। यह उपकल्पना निर्दिष्ट करती है कि मानव के पास खर्च के लिए एक सीमित मात्रा में ऊर्जा होती है, किन्तु भूमिकाओं एवं जिम्मेदारियों के अधिक संघनन के कारण अधिक ऊर्जा खचे हो जाती है, जिससे भूमिका–तनाव पैदा हो जाता है।

प्राथमिक विद्यालयों में अधिकांश महिला शिक्षक यह कहती देखी गयी है कि अब तो इन सरकारी स्कूलों में नौकरी करना बहुत ही भारी कार्य हो गया है। यहाँ अध्यापन का कार्य कम, शिक्षक को इधर–उधर भाग दौड़ अधिक करनी पड़ती है। कभी–कभी तो वह स्कूल न जाकर सरकारी कार्यो को पूरा करने में ही लगी रहती है। अध्येता ने फिर भी यह जानने का प्रयास किया है कि आखिर वे कौन सी स्थितियाँ है, जिनके चलते इन विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक को भूमिका तनाव प्रदान करती है, जिनसे वे मानसिक तनाव से भी गुजरती रहती हैं। इन स्थितियों में कुछ इस प्रकार हैं –

1. अध्यापन अनुभव और भूमिका –तनाव में नकारात्मक सम्बन्ध है – प्रायः कहा जाता है कि अनुभव बढ़ने के साथ कार्य निष्पादन में आसानी होती जाती है। एक अनुभवी व्यक्ति गैर–अनुभवी व्यक्ति की तुलना में किसी भी कार्य को सही एवं कम समय में पूरा कर सकता है। लेकिन कुछ संदर्भो में यह भी देखा गया है कि कम अनुभवी व्यक्ति अनुभवी व्यक्ति की तुलना में अपनी भूमिकाओं को ठीक प्रकार से कर देता है। ऐसा क्यों होता हैं ? इस संदर्भ में अध्येता का विचार है कि भूमिका निष्पादन के प्रति कर्ता की लगन, सकारात्मक सोच, जिज्ञासा आदि भी किसी न किसी, सकारात्मक सोच, जिज्ञासा आदि भी किसी न किसी मात्रा में अपना प्रभाव रखते है। इसलिए इस बात की संभावना बढ़ जाती है कि कार्य निष्पादन अथवा भूमिका निष्पादन में 'अनुभव' कोई विशेष प्रभाव अथवा निर्णयकारी प्रभाव (Determinate Impact) नहीं रखता।

अध्येता में अनुभव अवधि क्रमानुसार सूचनादात्रियों में भूमिका तनाव की तध्यात्मक जानकारी संकलित की, जिसका विवरण सारणी–1 में दिया गया है।

सारणी–(1)

शैक्षिक /अध्ययन अनुभव	भूमिका–तनाव						योग	प्रतिशत
	बहुत अधिक	अधिक	सामान्य		बहुत कम			
	सं०	%	सं०	%	सं०	%		
5 वर्ष से कम	45	69.23	15	23.08	05	7.69	65	100.00
5–10 वर्ष	56	69.13	16	19.15	09	11.11	81	100.00
10–15 वर्ष	50	75.76	13	19.70	03	4.54	66	100.00
15–20 वर्ष	26	61.90	10	23.81	06	14.29	42	100.00
20–25 वर्ष	11	47.83	09	39.13	00	13.04	23	100.00
25 वर्ष से अधिक	08	61.54	03	23.08	02	15.38	13	100.00
योग	**196**	**67.59**	**66**	**22.76**	**28**	**9.65**	**290**	**100.00**

सारणी–1 से स्पष्ट है कि 5 वर्ष से कम अध्यापन अनुभव रखने वाली अधिकांश सूचनादात्री (69.23%) किसी न किसी प्रकार की भूमिका से तनावग्रस्त हैं, जबकि 23.08% ने अपने तनाव को कम तनाव में बताया और 7.69% ने अपने को तनावमुक्त बताया। 5–10 वर्ष तक अध्यापन अनुभव रखने वाली सूचनादात्रियों में 69.13% ने स्वीकारा कि वे भूमिका तनाव में रहती हैं। जबकि 19.75% ने कम सहमति प्रकट की, तथा 11.11% ने बताया कि वे बहुत कम भूमिका–तनाव में रहती है। 10–15 वर्ष तक का अध्यापन–अनुभव रखने वाली सूचनादात्रियों में से 75.76% ने बताया कि वे रोजगार में आने की तिथि से ही भूमिका –तनाव में रही है। 19.70% ने कम भूमिका तनाव को स्वीकारा, जबकि 4.54% बहुत कम तनाव में रहती है। 15–20 वर्ष का अनुभव प्राप्त सूचनादात्रियों में से 61.90% भूमिका तनाव को अधिक मात्रा में, 23.81% ने कम मात्रा में, तथा 14.29% ने बहुत कम मात्रा में स्वीकारा है। 20–25 वर्ष का अध्यापन अनुभव रखने वाली सूचनादात्रियों में 47.83% बहुत

अधिक, 39.13% कम तथा 13.04% बहुत कम भूमिका तनाव से गुजरी है। 25 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव प्राप्त सूचनादात्रियों में से 61.54% बहुत अधिक, 23.08% कम, तथा 15.38% बहुत कम भूमिका तनाव से गुजरी है।

समंक विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित समस्त सूचनादात्रियां, चाहे उनका शैक्षिक अनुभव कम है या अधिक भूमिका–तनाव से गुजरी हैं। यह दीगर बात है कि भूमिक–तनाव की मात्रा में भिन्नता रही हो। प्रायः देखा गया है कि नियमित भूमिकाओं के अतिरिक्त जब भी सरकार की ओर से समसामयिक जिम्मेदारियाँ अलग से दी जाती हैं, तब भूमिका–तनाव बढ़ जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक अनुभव का भूमिका –तनाव पर कोई निर्णयात्मक प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि सरकारी कार्य निष्पादित हो जाने पर तनाव कम हो जाता है। अर्थात् चाहे कोई महिला शिक्षिका कम शैक्षिक कम शैक्षिक तनाव से गुजरना निश्चित है। इससे स्पष्ट है कि अध्यापन अनुभव और भूमिका तनाव में नकारात्मक सम्बन्ध है। इससे शोध प्रश्न–1 की पुष्टि हो रही है।

2. कार्यक्षेत्रानुसार महिला शिक्षकों में भूमिका तनाव की स्थिति अलग–अलग होती है।

सूच्य है कि राज्य सरकार की ओर से संचालित जिला परिषदीय प्राइमरी एवं उच्च प्राइमरी विद्यालयों की स्थापना ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में की जाती है। यदि संख्या की दृष्टि से देखा जाए तो ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों की अधिकता है। ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में सबसे अधिक सहभागिता इन जिला परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों (जिसमें महिला शिक्षक भी सम्मिलित हैं) की निर्धारित होती हैं। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत परिषदीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों को शहरी क्षेत्र की महिला शिक्षकों की तुलना में योजनाओं के क्रियान्वयन में अधिक सहभागिता निर्वाह करनी पड़ती है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रतिचयनित सूचनादात्रियों में 119 शहरी (41.03%) एवं 171 ग्रामीण (58. 56%) है। इस प्रकार अध्येता ने उक्त बिन्दु पर कार्यक्षेत्र के आधार पर सूचनादात्रियों से अभिमत प्राप्त किया, जिसे सारणी–2 में दर्शाया गया है।

सारणी–(2)

कार्यक्षेत्रानुसार महिला शिक्षकों में भूमिका–तनाव की तुलनात्मक स्थिति

ग्रामीण महिला शिक्षक शहरी महिला शिक्षक की तुलना में अधिक भूमिका तनाव में रहती है	सूचनादात्री कार्यक्षेत्र				योग	कुल का प्रतिशत
	नगरीय		ग्रामीण			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत		
सहमत प्रतिशत	67 (56.30)	23.10 (54.97)	94 (55.52)	32.41	161	55.52
आंशिक सहमत	38	13.10	39	13.45	77	26.55

प्रतिशत	(31.93)	(22.81)	(26.55)			
मिश्रित मत प्रतिशत	14 (11.76)	4.83 (22.22)	38 (17.93)	13.10	52	17.93
कुल योग प्रतिशत	119	41.03	171	58.96	290	100.00
प्रतिशत	(99.99)	– –	(100.00)	– –	(100.00)	– –

(काई वर्ग की गणना)

परिकलित काई वर्ग (x^2) का मान = 6.47

परिकलित स्वातंत्रयांश (Degree pf freedom) = 2

D.F. 2 एवं प्रोबेबिलिटी 0.05 पर संभाव्य

काई वर्ग (x^2) का मान = 5.99

परिणाम – दोनों चरों (Variables) के मध्य सार्थक सम्बंध

सारणी–2 के विश्लेषित प्रारूप से स्पष्ट है कि 55.32 प्रतिशत सूचनादात्रियां संदर्भ बिन्दु पर सहमत, 26.55 प्रतिशत आंशिक सहमत थीं, जबकि 17.93 प्रतिशत ने अपना मिश्रित मत प्रकट किया। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत महिला शिक्षक शहरी क्षेत्र में कार्यरत महिला शिक्षक शहरी क्षेत्र में कार्यरत महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक भूमिका–तनाव में रहती हैं।

सारणी–2 के लिए परिकलित काई वर्ग मूल्य का मान 6.47 है तथा D.F. 2 है। Degree of freedom 2 एवं प्रोबेबिलिटी 0.05 पर संभाव्य काई वर्ग का मूल्य 5.99 है जो परिकलित काई वर्ग (x^2) के मान 6.47 से कम हैं। जो यह मूल्य दर्शाता हैं कि संदर्भ बिन्दु एवं उस पर प्रतिचयनित सूचनादात्रियों से प्राप्त अभिमतों के मध्य सार्थकता (Reality) स्पष्ट होती है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि सारणी में व्यक्त दोनों पर स्वतंत्र है। किन्तु दोनों के मध्य एक सार्थक सम्बंध (Significant Relation) हैं। अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत महिला शिक्षक शहरी क्षेत्र में कार्यरत परिषदीय महिला शिक्षकों की तुलना में भूमिका –तनाव में अधिक रहती है। इससे शोध प्रश्न–2 की पुष्टि हो रही है।

: संदर्भ सूची :

1. सिंह, ए०वी० एवं आर० बाजपेयी (सम्पा०) 2001 ''कबीर ग्रंथावली'' शिक्षा प्रकाशन, बड़ा बाजार, बरेली।
2. तनेजा, वी०आर०, 1973, ''एज्यूकेशनल थॉट एण्ड प्रक्टिस'' स्टर्लिग, नई दिल्ली, पृ० 51।
3. ऑगबर्न एण्ड निमकॉफ, 1979, ''समाजशास्त्र'' पृष्ठ 153–154।
4. बेन्टन, एम०, 1965, ''इन फर्नाडीज, आर० (1977), द आई, द भी एण्ड, यू–एन इन्ट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपॉलॉजी, प्रीगर, न्यूयार्क।
5. लिण्टन, आर० 1945, ''द कल्चुरल बैक ग्राउंड ऑफ पर्सनेलिटी, एप्लीटोन सेंचुरी क्राटस, न्यूर्याक कोटिड बाई एस० देवी इन रॉल कान्लेक्ट अमंग वुमन टीचर्स, कॉमनवेल्थ, नई दिल्ली, पृ० 7 ।

6. गॉफमेन, ई०ए०, इन जी० लिण्डजे एण्ड एरोसन, ई० 1961, ''द हेण्डबुक ऑफ सोशल साइकोलॉजी एमरिण्ड पब्लिशिंग, कम्पनी, प्राइ० लिमि० वाल्यूम–1, 1968, पृ० 560–561 ।
7. कॉन, आर० एल० एण्ड क्विन, आर०पी० 1970, रॉल स्ट्रेस : ए फ्रेम वर्क फॉर एनालाइसिस, इन ए० मैकलीन (एडी०) मेन्टल हैल्थ एण्ड वर्क आर्गेनाइजेशन, रेंड मैकनेली, शिकागो, पृ० 50–115 ।
8. गुडे, डब्ल्यू, एस० 1960 ''ए थ्योरी'' ।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/22

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

मोहित शर्मा एवं डॉ0 धर्मवीर सिंह

For publication of research paper title

"अध्यापन–अनुभव व कार्यक्षेत्रानुसार महिला–शिक्षकों में भूमिका–तनाव की स्थिति"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com